https://archive.org/details/UndatedDharamDhyan135D/page/n0/mode/1up

All Items on https://archive.org/details/realpatidar

Full Library on https://realpatidar.com/library

"धरम ध्यान"

ॐ

फर्मानजी बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

पहेला लेवो साहेबना नाम दीस होर राता सगली ठाम ॥
जो तु परख सो अपना ईमान । तब तुम करवो मेरा ध्यान ॥
सर्वे धरम का सीर ईमान । सर्वे बंदगी का थर ईमान ॥
कोई बंदगी बगैर ईमान । ठीक न थावे हारे जान ॥
पुजी राहाकी हये ईमान । बडी न्यामत भाई ईसकु जान ॥
दिल से कहवे साहेब येक । और जी सो भी कहवे साहेब येक ॥
ईमान ईसही का नाम है भाई । और सर्वे बंदगी ईस पाछे आई ॥
ईमान से मुक्ति पावोगे भाई । ईमान से होवे तुमे बडाई ॥
ईमान हयेगा साहेब का नुर । ईमान से साहेब दीसे हजुर ॥
ईमान होवे तो पाप जो जावे । ईमान होवे तो वैकुंठ पावे ॥
ईमान से सारा दिसे जहुर । ईमान से करवो जीव भरपुर ॥
ईमान होवे तो होवे धरम । ईमान से सारा गले करम ॥
रोज कयामत ईमान का नुर । दीठोगे तुम ही ईसका जहुर ॥
बडी बडाई ईमान की होवे । और ईसके सबब से भी तुमकु होवे ॥
तो दिल से दुनीया दुर करो । और साहेब नामकु दील में धरो ॥

realpatidar.com

https://archive.org/details/UndatedDharamDhyan135D/page/n1/mode/1up

Real Patidar Library

https://www.realpatidar.com/library

This book/literature/article/material may be used for research, teaching, and private study purposes. Any substantial or systematic reproduction, redistribution, reselling, loan, sub-licensing, systematic supply, or distribution in any form to anyone is expressly forbidden.

The library does not give any warranty express or implied or make any representation that the contents will be complete or accurate or up to date. The library shall not be liable for any loss, actions, claims, proceedings, demand, or costs or damages whatsoever or howsoever caused arising directly or indirectly in connection with or arising out of the use of this material.

Full terms and conditions of use: http://www.realpatidar.com

About Real Patidar books

Real Patidar's mission is to organize the information on Satpanth religion, which is a Nizari Ismaili sect of Shia branch of Islam, and to make it universally accessible and useful. Real Patidar Books helps readers discover the material on Satpanth online while helping authors and researchers in their studies. You can know more by visiting http://www.realpatidar.com

You can resize and move this box in any PDF Application like Adobe Acrobat Reader.

No specific pages. See whole book.
References by: RealPatidar.com

https://archive.org/details/UndatedDharamDhyan135D/page/n2/mode/1up

realpatidar.com

"धरम ध्यान"

ॐ

फर्मानजी बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

पहेला लेवो साहेबना नाम दीस होर राता सगली ठाम ॥
जो तु परख सो अपना ईमान । तब तुम करवो मेरा ध्यान ॥
सर्वे धरम का सीर ईमान । सर्वे बंदगी का थर ईमान ॥
कोई बंदगी बगैर ईमान । ठीक न थावे हारे जान ॥
पुजी राहाकी हये ईमान । बडी न्यामत भाई ईसकु जान ॥
दिल से कहवे साहेब येक । और जी सो भी कहवे साहेब येक ॥
ईमान ईसही का नाम है भाई । और सर्वे बंदगी ईस पाछे आई ॥
ईमान से मुक्ति पावोगे भाई । ईमान से होवे तुमे बडाई ॥
ईमान हयेगा साहेब का नुर । ईमान से साहेब दीसे हजुर ॥
ईमान होवे तो पाप जो जावे । ईमान होवे तो वैकुंठ पावे ॥
ईमान से सारा दिसे जहुर । ईमान से करवो जीव भरपुर ॥
ईमान होवे तो होवे धरम । ईमान से सारा गले करम ॥
रोज कयामत ईमान का नुर । दीठोगे तुम ही ईसका जहुर ॥
बडी बडाई ईमान की होवे । और ईसके सबब से भी तुमकु होवे ॥
तो दिल से दुनीया दुर करो । और साहेब नामकु दील में धरो ॥

realpatidar.com

https://archive.org/details/UndatedDharamDhyan135D/page/n3/mode/1up

realpatidar.com

ये ही येबादत बंदगी भाई। कैनेह दुनीया का छोडो भाई ॥
नेहे दुनीया घना हये भोडा। जीवकु काला कर रहे खोटा ॥
नुर जीकर से राहपर चालो । तोबा सेती जीवलज आलो ॥
और जे बंदा साहेब की याद करे। तो साहेब भी उसकी याद करें॥
अने हरदम साहेब का सुकर करे। तो कुफर उस दील से दुर पडे ॥
पहेले तोबा करवो भाई। पाछे बंदगी करवो भाई ॥
दुनीया से जाना हयेगा भाई। मुसाफर ईसका नाम धराई ॥
मुसाफर अपने चलने की। फिकर कर पीहुके मिलने की ॥
वखत चलने के फेर पस्तावे। पस्ताये से कछु हात न आवे ॥
येवी बाता दिल से धरे। तब नुर ईमान उस हृदे भरे ॥
जब होवे जीभ और दिल तुज पाख। तब होये मराबत ईस पुतले खाक॥
भाई साचे बोल साहेब कु भावे। और जे झुठा बोले दोजख जावे॥
साहेब आगल बोले साच। तो कुछ ना लागे उसकु आंच ॥
जीवकु अपने येक ज ठाम। रख कर लेवो साहेब नाम ॥
जीवडा येक बहु ठाम ले जावे। और गफलत माहे दीन गमावे ॥
तब झुबांजुंबना रंग मे थावे। और ढोरो मांहे जनम गमावे ॥
रात और दीन जीकर तु कर। और ध्यान में पीहुके फीकर तु कर ।
जब होवे रात तुज दीन येकसा। तब होवे काज कठन आसा ॥
जे तमे समजो बातकु मेरी। फरी नाकर सो बात कु दव्हरी ॥
जे तमे जानो प्रेमरंग बात। छेट सोवढ ना लोक संगात ॥
जे तमे चाहो स्वामी काम। दीस और राता लेवो नाम ॥

realpatidar.com

https://archive.org/details/UndatedDharamDhyan135D/page/n4/mode/1up

realpatidar.com

जब तमे लगसे नेहा हात। होये उजाडी अंधारी रात ।।
तन मन से जब न्हासे लुझ। डावी जमनी पडसे सुझ ।।
डावी जेमनी पसली मांहे। बैसा दुसमन खबर कुछ ना है ।।
चार नफस है सांमळो भाई। ईसकी खबर कुछ तम ने पाई ।।
तीस पर सैतान पांचवा बैरी। साहेब राहा बीसरा ये घनेरी ।।
बुरी बाता वो बहोत सी खावे। साहेब राहा वो बहुत भुलावे ।।
नाम च्यारों के न्याने हयेगे। येक येकज से भारी हयेगे ।।
कामे अपने जुदे-जुदे। येक येकजकु दखलन दे ।।
नाम ईन सबके सांभळो भाई। सांभळो सगले राहापर आई ।।
पहेले नफस अमारा जानो। बीज्या नफस लवामा मानो ।।
तीज्या नफस मुल हेमा कहीये। चौथा नाम मुतमाईना लहीये ।।
सीफत च्यारों की करु बखान। सांभळो भाई यों जीके कान ।।
स्वामी अपने कुदरत से। किये नफस सब जुदे जुदे ।।
जैसे लोक पर थम के देखो। तैसा नफस तुम उनका पेखो ।।
भला बुरा जे दुनीया करती। नफस के जोरे लडती मरती ।।
और जे कोई नफस नाकर हे काम। तो पावे होह तो वैकुंइ ठाम ।।
और जे ते लोक दुनीया के सारे। नफस तो उनपर गालब हारे ।।
नफस गालब नबी यों पर नाही। वलीयों पर भी नाही नाही ।।
फाफीरो कु अमारा हयेरे। ईस काजे ये बुडे हयेरे ।।
नफस लवामा गुन्हे गारोकु दीता। और ईनके काजे दोजख कीता ।।
नफस मुलहेमा खास रुखेसर कु दीता। के जीव से साहेब ना कु हता ।।

realpatidar.com

realpatidar.com

नबी वलीकु मुतमाई ना दीता। तखत खलेपा आपना कीता ॥
और जे ती अपनी कुदरत सारी। नबीयों वलीयों के तनमे पाडी ॥
नबी वली सब भेदकु समजे। सीर जावे तो गुज न कहवे ॥
पनहा जैसे हुकुम उन होवे। तब वो विलायत जाहेर कर हे ॥
जब बंदा येकज राहो पर होवे। साहेब नाम वो दील से लहने ॥
हुजेत कु जब दुर करें। और हुकुम परवाने अमल करें।
जब उस नफस का मैल गले। तब उस साहेब राहा खुले ॥
साहेब राहा हये बहोत कठन। पग धरते जी कोई देवे मन ॥
ईस बातो जब कोई राह पर आवे। तब वो शाह हुसनी पावे ॥
दुनीया काजे दीन कु खोवे। साहेब नाम ना दिल से लहवे ॥ न
नफस दुसमनकी नही फिकर। बीज्या तीज्या करे जीकर ॥
नफस दुसमन ये बैरी वैसा। कहया तुम ईसका करवो कैसा ॥
भाईयों ईसका कहया न करना। जे चाहो अमरापुर लहना ॥
येह बैरी की सभा तो जावे। साहेब यहा वो की सभा तो आवे ॥
ये जावे तो होवे रुठा। तनका जावे कचरा कुडा ॥
जीमे जीसके नेहकी आगा। कचरा कुडा बलने लागा ॥
उच्या घाट बीकर है बाका। तीसपर चढे जिसे नेहा लागा ॥
नेह का थाना भारी आलो। ईन सबकी जब चैकी भा जो ॥
वैसे जब ईन सब पर अमल। जे तमे पगने धरो समल ॥
खाक, पानी बाव और आग। ईन च्यारों से रचीया घाट ॥
येह भी येक येकज का बैरी। ज्यानो बात सही कर मेरी ॥

realpatidar.com

https://archive.org/details/UndatedDharamDhyan135D/page/n6/mode/1up

realpatidar.com

खाक कु तो बाव ले जावे। पानी देखो आग बुझावे ।।
ईन च्यारों से पुतला कीता। नाम रखा उस आदम मीता ।।
आदम की तरन ज्यान। ईसका भी तुम सुनो बयान ।।
कोई पेटे नबीयों के होई। कोई पेटे फिरस्ते के होई ।।
कोड़े पेटे हयेवान के थाई। के खावे पीवे करे लडाई ।।
बीजी येह तो बात न जाने। खाने पीनेकु ई बखाने ।।
फेर पुतले माहे रुह पैठाई। जान बुझ उस बहुत सीकाई ।।
रुह कहे ये साहेब मेरे। हु ना पैठुं पुतले मेरे ।।
हुकुम हुवा केव पैटेना ही। बोली येक वाती हये याही ।।
हुकुम हुवा कहे करुं कबुल। ना तुं आपस होये मलुल ।।
रुह योवींती करने लगी। साचे कौल बधाने लागी ।।
याहा मय बहुत खुसी से थी। जे मन भायेसी करती थी ।।
ईस पुतल मे कैद घनेरी। वायेदा कर कर पैंठु गेरी ।।
ज्याती हुं मै बुलावो कब। कहो साहेब ये मेरे रब ।।
हुकुंम हुवा येह तेरी खुसी। जब तुं कहे बुलाउ तभी ।।
जय होय वायदा नीकलकर ज्याई। जे पीसेती कौल बधाई ।।
जीस कौलो ये भीतर आई। उस कौलीये बाहर ज्याई ।।
रुह का भी तुम सुनो बयान। और तुम लावो मुजसे ध्यान ।।
ज्यात नीरजेन नीराकार। जीसने किया ये सब आकार ।।
उने पहेले आपसे। रुह नबीकी कीई हये ।।
रुहका नुर जेब हुडा ज्याहेर। तमहीसे आया बाहेर ।।

realpatidar.com

https://archive.org/details/UndatedDharamDhyan135D/page/n7/mode/1up

realpatidar.com

फरी रुहके नुरकुं देखा साहेब । सेरम पडी तब उसकुं गालब ॥
सेरमसे नुर टपकने लागा । ये सब जुलवा होने लागा ॥
जिस नुरका ये सब मंडान । उसकुं का हालग करुं बयान ॥
अरवाहा उसही नुरसे कितीया । पहेले नबीयों की और देखो जेतीया ॥
फरी नबीयों की अरवाहोसेरे । मुनीवर की अरवाहा कितीया ॥
फरी मुनीवर की अरवाहहोसेरे । गुन्हेगारोंकी अरवाहा कीतीया ॥
फरी गुन्हेगारोकी अरवाह होसेरे । मुनाफ कोंकी अरवाहा कीतीया ॥
फरी मुनाफकोंकी अरवाह होसेरे । काफीरों की अरवाहा कीतीया ॥
फरी ईनसान की अरवाह होसेरे । जींद फीरस्ते हुय हयेरे ॥
फरी जीनो की अरवाह होसेरे । सैतान की अरवाहा तो हुईरे ॥
फरी जब सब पैदा रुह करी । ईनसान की रुहा जुदी करो ॥
फरी रुह ईनसान की च्यार कतार । उभी कीतीया बेसुमान ॥
आगे पीछे उभी कीतीया । जेती दुनीया में येह सगली होतीया ॥
पहेले सफ नबीयोकी कीती । पाछे सफ वलीयों की कीती ॥
तीस पाछे सफ मुनीवर की थाई । तीस पाछे सफ काफोरोंकी थाई ॥
पाछे गयेबसे येक आवाज हुवा । उसमे साहेब येम कहया ॥
के मै तुम्हारा साहेब हुरे । सुनीया रुहा था जे सबरे ॥
जो रुहा आवाज के साथ देखा था नुर साहेब जात ॥
सुनकर वो तो सीसीदा करी । और बोली या हमारा साहेब तुं ॥
और जीसने न देखा नुर ही । ना उन कीता सीसीदा वही ॥
और जिसने सीसीदा वाह न किया । उसके तो बै टोले कीया ॥

realpatidar.com

https://archive.org/details/UndatedDharamDhyan135D/page/n8/mode/1up

realpatidar.com

फरी बे टोलेसे च्यार करे। और उनके सिर सब गुन्हा पडे ॥
और जिसने सीसीदा न किया भाई। हरे वोह तो साई दोजख जाई ॥
भाई दोजख कीधी ईसी सबब। ना सीसीदा कीया काहान रब॥
फरी जैसी जिसकी करनी भाई। हरे वाहे तो सारे आगज आवी ॥
जे कीई मुकन्या साहेब से जेब। वो ही मुकन्या साहेब से अब ॥
फरी फीर पस्ताने लागे सब। पस्ताये से कुछ ना होवे अब ॥
जे होना था सो होये गया। जे करना था सो करी गया ॥
भाई आदमे जे कुछ होये गया। वो ही अनाद मे होये रह्या ॥
फरी जोन और इनसान और हयवान। उस नुर का सब मंडान ॥
असमान और फरिस्ते जेते। नुर नबीसे येह सब किते ॥
पाथर दरीया धरती सारी। नुर नबी का सबमे ज्यारी ॥
नवखेड परिथी अवर अगासा। नुर नबीका सबमे राचा ॥
ईन सबका भी करुं बयान। भाईयों मुनीवर धरसो कान ॥
कान धरो और जीव लगावो। जे आपस छुटकारो च्याहो ॥
फरी नुर से मोती पैदा कीता। उसपर तेज नजर आप किता ॥
आधा पानी होये गया। आधी आग वो होये रह्या ॥
आधा पानी और आधी आग। उनसे क्या क्या किये हये काज ॥
पछी पानीकुं जब गरम किया। उसमे से थी धुव्वा हुवा ॥
आसमान उस धुव्व हये। कुदरत सेती उभे हये ॥
पछी आगमे पैदा लपट करो। उसमे सेती बाव हरी ॥
पछे बाव से छोल उडने लागे। चांद, सुरीज सब होने लागे ॥

realpatidar.com

Link: http://www.realpatidar.com/library
email: mail@realpatidar.com

https://archive.org/details/UndatedDharamDhyan135D/page/n9/mode/1up

realpatidar.com

और जे तांबुरज असमान के सारे। उसही आग के हुये हारे ।।
और जे ते नारे सब तुम देखो। सारे उस ही आग के पेखो ।।
फरी पानी कुं जेब बावलगी। हलने लागा पानी सबी ।।
जेब बावसे पानी हलने लागा। मैल उसपर होने लागा।
उसही मैल की धरतीया सब। बात कहुं सुनो तुम सब ।।
फरी पानी उपर छौल चलो। छौल से डोंगर हुये सबी ।।
फरी बाकी पानी जोये रह्या। सात समुंदर उसके किया ।।
भाई जेता सारा हये मडांन। पैदा किया छे दाढे ज्यान ।।
वारस नेउ जेमी असमान। पैदा कीधी ईनकु ज्याना ।।
जेब लगन था जमी असमान ।तब लग दीन भी ना था जान ।।
फरी असमानकुं पहेले ले फैलाया। पछी उसमे सेती दीन निकलाया ।।
पछी उसके फेर सब नाव धरे। अरबी फारसी हिदवी परे ।।
फरी जैसी जिसकी बोली होवे। तैसा वो तो नाम कु लहवे।
वार खे उपाहाड कुं कीधा। बोझ जमी के सीर पर दीधा ।।
फरीवार सोमकुं सब रुख कीधे। दुख सब मंगलवार कु कीधे ।।
और पैदा नुर बुधवार कीया। और हयेवा ब्रहस्पतवार कीया ।।
और सुकरवार के आखरे रोज के ताई ।पैदा कीया आदम के ताई ।।
फरी और फरीस्ते पैदा करे। फरी हुकम हुवा तुम ज्यावोरे ।।
फरी हुकम से फरिस्ते आये सब। सात जमी के नीचे तब ।।
फरी हुकम हुवा सात तबक जमी। हात पर लेकर रहोरे काई ।।
येकज हात उन मसरीफ कीता। बीजा हात उन मगरीब कीता ।।

realpatidar.com

https://archive.org/details/UndatedDharamDhyan135D/page/n10/mode/1up

realpatidar.com

फरी पाहाड चुनीका पैदा कीता। पग तले की रस्ते के लेकर दीता ॥
फरी गाये कु पैदा कुदरत से। असी हजार सींगो से ॥
फरी गाये सीर उपर पाहाड दिया। और बोझ भुईका उसपर कीया ॥
फरी गायके नीचे माछी करी। गाये तो उसके उपर खडी ॥
फरी माछी तले समुंदर कीया। माछी कु ले उसपर दीया ॥
फरी समुंदर हेतल रेत करी। समुंदर कु लेकर रेत खडी ॥
पछी रेत के नीचे बाव करी। बाव उस सबकु ले खडी ॥
भई तन मे भी सब बाव दीसे। नही ईसका ईदबार कीसे ॥
हौर जे ती सारी दुनीया देखो। ईसी जुसेके अंदर पेखो ॥
जे बंदगी होये सो करवोरे। भाई ग्यानज ध्यानज धरवोरे ॥
येकसे येकज भारी कीता। कुदरत अपनी दीखला दीता ॥
दीन येक सैता गायके साथ। बोल्या येकज हये रे बात ॥
तुने केव सब धरती सारी। सीर के उपर लेकर थाडी ॥
बहोत ईसमे हये दुख तुझे। मेहलदे ईसकु कहु तुसे ॥
तुजकु येक जागो के बीच। लेकर जाउ के करे खुसीच ॥
गायने जब ईस बात पर धान। सुने लागी देकर कान ॥
तब हुकम हुवा येक माछेर कु। गायके मस्तक ज्यारे तु ॥
माछेर गाये के मस्तकमा फरडया जाकर उसकेता ॥
दुख से धीरनी गायक ताई। घेरी खाकर पडी वही ॥
अैसी वरस बेसुद पडी। ना उसे दील की खबर रही ॥
पाछे गायेकु जब सुध हुई। पाहाड देखा था जैसा सोई ॥

realpatidar.com

Link: http://www.realpatidar.com/library
email: mail@realpatidar.com

realpatidar.com

पाछे गयेबसे येक आवाज हुवा। और गायेकु उसमे येम कहया ।।
तुने जाना धरती के ताई। मुजबीन कोई उटाये नही।
ये सब अपनी कुदरत से। रखता हु मै आपसे ।।
भाई गफलत छोडो कुदरत देखो। कुदरत खेल साहेब के पेखो ।।
जब से सारी दुनीयारे। आखीर करेगा साहेबरे ।।
हुकम होयेगा जेबराईल कु जेब। सात समुंदर ले ज्यावो सब ।।
सात समुंदर लेकर ज्यावो। गाये के मोहडे लेकर बाहो ।।
जबराईल सात समुंदर के ताई। परमे लेकर ज्यायेंगे व्हाई ।।
फरी सात समुंदर सारे रे। गायके मुमे डालेंगे ।।
गायेका मुना भागे उसे। ईमान से तु ज्यानो सच ।।
और जे ती सारी दुनीया देखो। ईसी जुसे के अंदर पेखो ।।
ध्यान लगावो पी धीर आवो। बीन पी कुछ नही छुटकारा पावो ।।
बीन पी कुछ छुटकारा नाही। बातज सामलो होरे ग्यानी ।।
नवखंड प्रीथमी और अगासा। बुझे न काजे पीहु की धाता ।।
पी का नुर हये बहोत नजीक। ग्यानज अपना तुम करो अदिक ।।
तन मे दील में हये दील में रुहा। रुहमे ज्यानो अपना पीहु ।।
बात हये भारी बोलो रे। गाढ जुसो की खोलुं रे ।।
जिस बखत बाची ज्यायेह बात। छाने होकर सुनीयो बात ।।
छाने होकर जब तुम सुनो। तो रहमत भेजे साहेब तुमो ।।
और वखत सुनेके ईसकु भाई। नाम भजो तुम साहेब काही ।।
और अरथ ईसके कु दीलमे बांधो। काम सैतानी में हली छाडो ।।

realpatidar.com

https://archive.org/details/UndatedDharamDhyan135D/page/n12/mode/1up

realpatidar.com

और नेह लगाये कर दील से सुनो। साहेब बात सरसदी मत गीनो ॥
और वखत भनेके दुनीया की बात। बोलो नाही किसके साथ ॥
च्यार मकाम हये चेलने के। पीहु के साथ मीलने के ॥
और जीसे हिदायत साहेब देवे। तो बाता दील मे पीहुकी लहवे ॥
पहिले शेरीयेत नाम हये जाना। तरीकत बीजा नाम बखानो ॥
तीज्या नाम हकीकत बोले। मारीफत चोथा नाम ही खोले ॥
दाखला ईन च्यारो का बोलु। छुपीया बाता लेकर खोलु ॥
और मुनीवर काजे बात करु। और मुनीवर कु अपने साथ धरु ॥
जे खासा मुनीवर होवे मेरा। तो नाही उसकु हरगीज फेरा ॥
शेरीयत जैसी किस्ती आहे। तरीकत जैसी दरीयाब आहे ॥
हकीकत जैसी सीप हये उसमे। मारीफत जैसा मोती तासमे ॥
और जे कोई चाहे अपना रतन। किस्ती सेरीयेत बैसाडे मन ॥
पछी कीस्ती दरीया लेकर बाहे। और दरीया भीतर गोता खावे ॥
जब फजेलसे सीपी तुज जेडे। तब मोतीउ समे हात पडे ॥
और जे कोई अैसी चेलेना च्याल। तो मोती मीलना उसे माहाल ॥
फरी ईन च्यारो कु भी समज्यावु। बात मुनीवर के हृदे बाहु ॥
शेरीयत वलखो हुकमो ताई। तरीकत वोलखो फैलो के ताई ॥
हकीकत बोले जे बीते तन पर। मारीफत भेद हये उसके भीतर॥
शेरीयत हयेगा साहेब हुकम। तरीकत राहा पर चलो तुम ॥
जेब गुज हकीकत पर कहोवे। तब मारीफत ईल्हाई नैनो जोवे ॥
फरी च्यार मुकाम हये बीजे भाई। तुमकु साहेब राह बताई ॥

realpatidar.com

Link: http://www.realpatidar.com/library
email: mail@realpatidar.com

https://archive.org/details/UndatedDharamDhyan135D/page/n13/mode/1up

realpatidar.com

मुकाम पहेले कु ना सुत सुत ज्यानो। मुकाम बीजा मल कुत पहच्यानो ॥
मुकाम तीज्या जबुरुत हये नाम। मुकाम चौथा लाहुत हये नाम ॥
पहेली मजल ना सुत जो होवे। सीफत हयेवानी सब तीसमे जोवे ॥
फरी कोई ईसमे से तीरकर जावे। मुकाम मल कुती वो यह पावे ॥
जेब ये जावे उस मुकाम। वोलखे फीरस्ते ठामे ठाम ॥
जेब ईस पर से भी तीरकर जावे। मुकाम जबरुती उसकुं पावे ॥
जेब ये पोहचे वैसी ठाम। तब वीलायेत होवे ईस केता ॥
फरी ये ना करे दुनीया पर नजर। और छोडी दुनीया जावे गुजर ॥
फरी ईसके उपर बात ये आहे। बीन साहेब वैकुंठ ना च्याहे ॥
फरी ईसपर से कोई तरकर जावे। मुकाम लाहु ते के ताई पावे ॥
जेब ये पीहुमें आपस खोवे। और पीहु बदले ये जीवता होवे ॥
तब झुंबा झुंबी रंग मे होवे। और नव खंड प्रीथमी नैनो जोवे ॥
मतकर उसींसा दुनीयाका पीठ। कोई वे तुज से पाले कोई मारे दीट ॥
मतकर उसी साफना दुनीया पर। और मकर इस केसे चालो डर कर ॥
और जे कोई घनी बंदगी करे। अने फुल्र पाकडी साहेब कीमे जीवरके बी धरे ॥
तो उसकुंभी वैकुंठ ना होवे ठाम। भाई ईतना जानो मनमे हा ॥
और जे कन साहेब राहामे वावे। तो ईस जुग उस जुग कनस वो खावे ॥
और जीवकी रके बी दुनीया का गम। वो अपने जेर का खावे गम ॥
झुटी बाप पर खरच करावे। साहेब नाम पर दुख जे नावे ॥
जे वावो सो तो हातज आवे। कब तुमे ईसकी समजन थावे ॥
कन की समजन बुझो भाई। ना तुम आपस लुसुमाई ॥

realpatidar.com

https://archive.org/details/UndatedDharamDhyan135D/page/n14/mode/1up

realpatidar.com

कन येक धरम का धरती आछो । वावो तु मरे ना हो काचो ।।
जे धरती आछी तुमे कन वावो । तो कनस घनेरे उसके खावो ।।
तो ना होये तोटा तुमे भाई । सर्वे समजो राहा पर आई ।।
सकती धरती लेह पछानो । कन धरम तमे अपना जानो ।।
तुमको ये ही दाखला हयेरे । गाडे तुम केव गाफील होरे ।।
यहां भी वो ही दाखला देखो । जे था आद अनादे पेखो ।।
बात धरम की मनमे जानो । धरम ध्यान कु मन मे आनो ।।
धरम से सीजे काज तुम्हारा । धरम ध्यानपर करो पीयारा ।।
धरम अपना तो काम ही आवे । ना कीस बाप और मा आवे ।।
धरम अपने कु छोडो नाहे । सतसे चालो तन के माहे ।।
भाई ईतनी बाता कान धरो । ग्यानसे अपने ध्यान धरो ।।
खतरा दिलका दुर करो । और धरम ध्यान कु मनमे धरो ।।
पीहुकी बाता दील में रखना । सुख मे दुख की बाता न करना ।।
मनमे अपने नेह लगावो । सुलतान आलम पीहु धीर आवो ।।
सुलतान आलम धरम ध्यान । बोले वा कानेरे आन ।।
जे कोई भने सुने धरम ध्यान । सबाब होवे उसे नब लाख कुरान ।।
बावा साहेभी नाम हमारा । बोले साहेब तारन हारा ।।
बात साहेब की जीवमे राखो । जीवमे अपने पीहुकु आखो ।

ये धरम ध्यान लीखीतंग मुखी विठ्ठल राघो चौधरी विटवे
मिती माघ कृ.१३ रोज बुधवार १८/१२/२००४
''महाशिवरात्री'' शके १९२५ संवत २०६०

''ईती श्री धरम ध्यान सपुर्नमस्तु''

realpatidar.com

Link: http://www.realpatidar.com/library
email: mail@realpatidar.com